आशा पारस बहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित(PEER REVIEWED) शोध-पत्रिका
खंड -1, अंक-1, अप्रैल-सितंबर 2025 (प्रवेशांक), apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

# मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद में परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था

**गौरीकान्ता साहू**
एमआईजी-33, सेक्टर-8, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,
साइंस सेंटर के पास, सड्डू, रायपुर, छत्तीसगढ़ 492014
gksahu09jv@gmail.com

**शोध सारांश**

मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद श्री ए. नागराज जी द्वारा प्रतिपादित एक समग्र, वैज्ञानिक और मानवीय दृष्टिकोण है जो व्यक्ति, परिवार, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन और सहयोग की अवधारणा को पुष्ट करता है। यह दर्शन अस्तित्व के यथार्थ अनुभव पर आधारित है और मानव जीवन के हर स्तर पर समाधान, समृद्धि, अभय और सह-अस्तित्व की दिशा में मार्गदर्शन करता है। इस दर्शन में परिवार को व्यवस्था की मूल इकाई माना गया है, जहाँ से अखंड समाज और सार्वभौम व्यवस्था की संरचना आरंभ होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था के विविध आयामों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

**मुख्य शब्द:** मध्यस्थ दर्शन, सह-अस्तित्ववाद, परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था, दस सोपानीय व्यवस्था

## प्रस्तावना

आज के युग में जब मानवता अनेकानेक समस्याओं से जूझ रही है, व्यक्तिगत स्तर पर अशांति से लेकर वैश्विक स्तर पर संघर्ष तक, ऐसे समय में मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद एक नई आशा की किरण के रूप में उभरा है। यह दर्शन एक नई समसामयिक ज्ञान प्रणाली है जो अतीत की परंपराओं से स्वतंत्र है। श्री ए. नागराज जी द्वारा प्रतिपादित यह दर्शन न केवल एक सैद्धांतिक चिंतन है, बल्कि व्यावहारिक जीवन में अनुप्रयोग की स्पष्ट दिशा प्रदान करने वाला जीवंत दर्शन है।

मध्यस्थ दर्शन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह परिवार को समस्त सामाजिक व्यवस्था की आधारशिला मानता है। परिवार से आरंभ होकर विश्व परिवार तक की एक समग्र व्यवस्था का प्रस्ताव इस दर्शन की अनूठी देन है। जिससे एक आत्म-अनुशासित, आत्मनिर्भर और सामाजिक सहयोग पर आधारित जीवनशैली बन जाता है। जिससे व्यवस्था में पारदर्शिता, जवाबदेही और न्याय सुनिश्चित होता है।

## प्रणेता श्री ए. नागराज जी का योगदान

श्री अग्रहार नागराज शर्मा का जन्म 14 जनवरी 1920 को कर्नाटक के हासन जिले के अग्रहार गांव में एक वैदिक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनका परिवार उस समय अपनी विद्वत्ता, सेवा भावना और कड़ी मेहनत के लिए प्रसिद्ध था। पारिवारिक परंपरा में वेद, दर्शन और उपनिषदों का गहन अध्ययन, श्रवण और उसके अनुरूप उपासना तथा सेवा कार्य का विशेष महत्व था। बचपन से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति के धनी नागराज जी के मन में कुछ मौलिक प्रश्न उठते रहते थे जो उन्हें बेचैन करते रहते थे।

नागराज जी ने अपने मामाश्री से वेद की गहन शिक्षा प्राप्त की और वैदिक साहित्य का व्यापक अध्ययन किया। उन्होंने श्रीविद्या साधना, वेदांत, उपनिषद और आयुर्वेद का भी गहरा अध्ययन किया। परंतु इतने व्यापक अध्ययन के बावजूद भी उनके मूलभूत प्रश्न अनुत्तरित रहे। आत्म-साक्षात्कार की तीव्र जिज्ञासा उन्हें सत्य की खोज में अपने प्रारंभिक युवावस्था में 1950 में कर्नाटक से अमरकंटक तक ले गई। जो पवित्र नर्मदा नदी का उद्गम स्थल है यहाँ उन्होंने अपनी आध्यात्मिक साधना की शुरुआत की। लगभग बीस वर्षों की कठोर तपस्या और संयम के माध्यम से उन्होंने अस्तित्व के रहस्य को समझने का प्रयास किया। इस लंबी साधना के दौरान उन्होंने समाधि की अवस्था प्राप्त की, परंतु समाधि में भी उन्हें अपने प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर नहीं मिले। इसके बाद उन्होंने समाधि से एक कदम आगे बढ़कर 'संयम' नामक अवस्था का विकास किया।

इस अवस्था में अस्तित्व ने स्वयं को प्रकट किया और उन्हें समस्त अस्तित्व की व्यवस्था, उसमें निहित नियम और अपने सभी प्रश्नों के स्पष्ट उत्तर प्राप्त हुए। इस अनुभव से उन्हें मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद की दृष्टि प्राप्त हुई। यह अनुभव संपूर्ण मानवता की धरोहर माना।

श्री नागराज जी ने अपने इस दर्शन को पंद्रह पुस्तकों के रूप में संकलित किया है जिनमें मानव व्यवहार दर्शन, मानव कर्म दर्शन, मानव अभ्यास दर्शन, अनुभव दर्शन, व्यवहारवादी समाजशास्त्र, आवर्तनशील अर्थशास्त्र, मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान, समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद, अनुभवात्मक अध्यात्मवाद, परिभाषा संहिता और मानवीय संविधान आदि प्रमुख हैं।

**मध्यस्थ दर्शन की मूल अवधारणाएं**

मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद की आधारभूत मान्यता यह है कि मानव ज्ञाता है अर्थात जानने वाला है और अस्तित्व सत्ता है जो जानने योग्य वस्तु है। इस दर्शन के अनुसार संपूर्ण अस्तित्व में जड़ और चैतन्य दोनों प्रकार की प्राकृतिक इकाइयां नित्य, संपृक्त और नियमबद्ध रूप से विद्यमान हैं। यह दर्शन इस पर जोर देता है कि ज्ञान व्यक्त होने योग्य है, वचनीय है, अध्ययन करने योग्य है और व्यवहार से प्रमाणित होने योग्य है।

**मध्यस्थ दर्शन के अनुसार**

"**सहअस्तित्व-** चारों अवस्था ,चारो पद, सत्ता में नित्य वैभव।

- सत्ता में संपृक्त जड़ चैतन्यात्मक प्रकृति।

-अनंत इकाई रूपी प्रकृति में परस्परता और विकास क्रम तथा विकास।

-अस्तित्व में परस्पर इकाइयों में अथवा इकाइयों की परस्परता में पूरक व उदात्तीकरण क्रिया और उसकी परंपरा।

-अस्तित्व में अनंत इकाइयों की परस्परता में विकास, पूरकता, उदात्तीकरण सूत्र और व्याख्या।"

समस्त अस्तित्व एक-दूसरे के साथ अस्तित्व में हैं और परस्पर निर्भर है। इस सिद्धांत के अनुसार, किसी भी व्यक्ति, समाज, या प्रकृति के अस्तित्व का उद्देश्य केवल अपने लिए नहीं है, बल्कि उस अस्तित्व का वास्तविक उद्देश्य अन्य सभी के साथ सह-अस्तित्व स्थापित करना और परस्पर पूरकता को समझना है।

नियति सहज विधि से जड़ परमाणु मे विकास पूर्वक गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य परमाणु बना है। मानव में संस्कार, वातावरण, अध्ययन पूर्वक क्रियापूर्णता (श्रम का विश्राम), व्यवस्था मे भागीदारी पूर्वक जागृति (आचरणपूर्णता) को प्रमाणित करता है। मानव शरीर व जीवन का संयुक्त रूप है व सामाजिक न्यायिक इकाई है जो निर्णय प्रधान विधि से जीता है।

मध्यस्थ दर्शन का मूल प्रस्ताव है – **"अस्तित्व सह-अस्तित्व है"**। इसमें मनुष्य की चार प्रमुख आकांक्षाओं – समाधान, समृद्धि, अभय और सह-अस्तित्व – को आधार बनाकर जीवन और समाज की संपूर्ण रूपरेखा प्रस्तुत की गई है।

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद वैचारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। "व्यापक सत्ता जागृत मानव में, से, के लिए कार्य व्यवहार काल में नियम के रूप में-, विचार काल में समाधान के रूप में, अनुभव काल में आनंद के रूप में और आचरण काल में न्याय के रूप में प्राप्त है क्योंकि सत्ता में संपूर्ण प्रकृति अविभाज्य रूप में विद्यमान है।यही सहअस्तित्व है।"

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार इकाई व व्यापक अविभाज्य है। व्यापक में इकाइयां डूबी, भीगी घिरी होने के कारण -ऊर्जा संपन्न, बल संपन्न और चुंबकीय बल संपन्न है। घिरी होने के कारण इकाई नियंत्रित है भीगी होने के ऊर्जा संपन्न व डुबी होने के कारण क्रियाशील है जिससे परस्परता मे पहचानना और निर्वाह करना होता है।

**परिवार की केंद्रीय भूमिका**

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार परिवार समस्त सामाजिक व्यवस्था का प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण सोपान है।" परिवार और व्यवस्था अविभाज्य है। परिवार हो, व्यवस्था नही हो और व्यवस्था हो परिवार नही हों, ये दोनों स्थितियाँ भ्रम का द्योतक है। पूर्ववर्ती आदर्शवादी और भौतिकवादी विचारों के आधार पर सभी शक्ति केंद्रित शासन अवधारणाएँ परिवार के साथ सूत्रित होना संभव नहीं हो पाई।"

परिवार वह पहला स्थान है जहाँ व्यक्ति संबंधों की पहचान करता है, मानवीय मूल्यों का निर्वाह सीखता है और न्याय का अभ्यास करता है। परिवार में व्यक्ति को विविध प्रकार के संबंधों का अनुभव होता है जैसे माता-पिता और संतान के बीच का संबंध, पति-पत्नी का संबंध, भाई-बहन का संबंध, गुरु-शिष्य का संबंध तथा मित्र और सहयोगी का संबंध। प्रत्येक संबंध में पूरकता और विशिष्ट जिम्मेदारी परिभाषित होती है। जो आत्मबोध की दिशा में आगे बढ़ने और सामाजिक उत्तरदायित्व को समझने में सहायक होती है।

परिवार में संबंधों की पहचान का अर्थ यह है कि प्रत्येक सदस्य अपनी भूमिका और जिम्मेदारी को समझता है। माता-पिता अपनी संतान के प्रति अपने दायित्वों को समझते हैं तो संतान भी अपने माता-पिता के प्रति कृतज्ञता और सेवा की भावना रखती है। पति-पत्नी एक-दूसरे के पूरक बनकर परिवार की नींव मजबूत करते हैं। भाई-बहन आपस में सहयोग और स्नेह की भावना रखते हैं। इस प्रकार परिवार में हर संबंध अपने आप में एक शिक्षा है जो व्यक्ति को जीवन भर काम आती है।

मूल्यों का निर्वाह परिवार में प्राकृतिक रूप से होता है। विश्वास, सम्मान, स्नेह, ममता, वात्सल्य, कृतज्ञता,गौरव, श्रद्धा, प्रेम आदि मूल्यों की शिक्षा परिवार के माध्यम से मिलती है।इस व्यावहारिक शिक्षा से बच्चे संस्कारवान बनते हैं।

न्याय का अभ्यास भी परिवार में ही शुरू होता है। जब निर्णय सामूहिक विचार-विमर्श के बाद लिए जाते हैं, तब न्याय की भावना का विकास होता है। यह व्यक्ति को बाद में समाज में भी न्यायप्रिय बनने की प्रेरणा देता है।

**परिवार सभा का आधार लोकतंत्र:**

परिवार सभा मध्यस्थ दर्शन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्था है जो वास्तविक लोकतंत्र का आधार है। परिवार सभा एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर विचार-विमर्श करते हैं और सामूहिक निर्णय लेते हैं। इस प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य संवाद और विचार-विमर्श के माध्यम से सर्वसम्मति बनाना है।

परिवार सभा में निर्णय तर्क और न्याय के आधार पर लिए जाते हैं। यदि कोई मतभेद होता है तो उसे बातचीत के माध्यम से सुलझाया जाता है। परिवार सभा में जिम्मेदारी का बंटवारा भी होता है।

**स्वराज्य की नई परिभाषा**

मध्यस्थ दर्शन में स्वराज्य की अवधारणा पारंपरिक राजनीतिक स्वतंत्रता से कहीं अधिक व्यापक और गहरी है। स्वराज्य का अर्थ है 'स्व का वैभव'। व्यक्ति जब अपनी क्षमताओं, जिम्मेदारियों और जीवन के उद्देश्य को समझकर स्वतः अनुशासित जीवन जीता है, वहीं से स्वराज्य की शुरुआत होती है तथा आत्मनिर्भरता, आत्म-अनुशासन और सामाजिक सहभागिता की पुष्टि है। आत्म-अनुशासन का अर्थ सहस्तित्ववादी समझ के आधार पर सही कार्य करना है।

"स्वराज का तात्पर्य- न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता और विनिमय सुलभता है। "

मध्यस्थ दर्शन में स्वराज्य तीन मुख्य स्तंभों पर आधारित है - न्याय, समृद्धि और अभय।

न्याय का अर्थ है संबंधों में पारस्परिक पहचान, मूल्यों का निर्वाह और सभी पक्षों की संतुष्टि। समृद्धि का अर्थ है सभी को समान अवसर मिलना, आवश्यकता के अनुसार उत्पादन होना, संसाधनों का न्यायसंगत वितरण होना और मूल्य आधारित विनिमय होना। अभय का अर्थ है व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और प्राकृतिक स्तर पर भय से मुक्ति। इस प्रकार स्वराज्य की सच्ची भावना का विकास होने से समाज में अभय आता है।

**दस सोपानीय व्यवस्था का स्वरूप**

मध्यस्थ दर्शन में परिवार से लेकर विश्व परिवार तक की एक दस-सोपानीय व्यवस्था का विस्तृत प्रस्ताव है जो परिवार मूलक स्वराज्य की आधारशिला है। यह व्यवस्था जमीनी स्तर से शुरू होकर क्रमशः ऊपरी स्तरों तक पहुंचती है और हर स्तर पर लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखती है।

- “मानव कुल अपना सम्पूर्ण वैभव को प्रमाणित करने के रुप में प्रथम सोपान परिवार ही है। परिवार में जो कमी रह जाती है वह कहीं भी आपूर्ति नहीं हो पाती।”

"प्रत्येक व्यक्ति एवं संस्थायें दश सोपनीय व्यवस्था में अभ्युदयार्थ भागीदार होना जागृति है। साथ ही उन्हीं स्थितियों में व्यक्ति एवं संस्थायें में, से, के लिये दायित्व व कर्त्तव्य निर्वाह करना सहज है। संस्था ही व्यवस्था है, व्यवस्था ही प्रबुद्धता है, प्रबुद्धता ही विधि, नीति व पद्धति है; विधि, नीति व पद्धति ही संस्था है। संस्था की प्रथमावस्था परिवार सभा, द्वितीयावस्था परिवार समूह सभा, तृतीय ग्राम मोहल्ला परिवार सभा, चतुर्थ ग्राम मोहल्ला समूह परिवार सभा, पाँचवाँ क्षेत्र परिवार सभा, छठा मंडल परिवार सभा, सातवाँ मडंल समूह परिवार सभा, आठवाँ मुख्य राज्य परिवार सभा, नवाँ प्रधान राज्य परिवार सभा, दसवाँ विश्व परिवार राज्य परिवार सभा, यही अखण्ड समाज की दश सोपानीय व्यवस्था स्वरूप है। अखण्डता ही समाज का प्रधान लक्षण है।"

**पहला सोपान परिवार सभा है जो सबसे छोटी लेकिन सबसे महत्वपूर्ण इकाई है।** यहीं से लोकतंत्र, न्याय और सहयोग की शिक्षा शुरू होती है।

**दूसरा सोपान परिवार समूह सभा है जहाँ कई परिवार मिलकर अपने सामान्य हितों पर चर्चा करते हैं** और सामूहिक निर्णय लेते हैं।

**तीसरा सोपान ग्राम-मोहल्ला सभा है जो स्थानीय समुदाय के स्तर पर कार्य करती है।** यहाँ स्थानीय समस्याओं पर विचार होता है और उनका समाधान खोजा जाता है।

**चौथा सोपान ग्राम समूह सभा है जहाँ कई गांवों या मोहल्लों के प्रतिनिधि मिलकर व्यापक क्षेत्र की समस्याओं पर विचार करते हैं।**

**पांचवां सोपान क्षेत्र सभा है जो एक व्यापक भौगोलिक क्षेत्र को संभालती है।**

**छठा सोपान मंडल सभा है जो प्रशासनिक इकाई के रूप में कार्य** करती है।

**सातवां सोपान मंडल समूह सभा है** जहाँ कई मंडलों के प्रतिनिधि मिलते हैं।

**आठवां सोपान मुख्य राज्य सभा है जो राज्य स्तर पर कार्य करती** है।

**नौवां सोपान प्रधान राज्य सभा है जो राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करती** है।

**दसवां और अंतिम सोपान विश्व परिवार सभा है जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवता के सामान्य हितों की देखभाल करती है।**

इस **दस सोपानीय व्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हर स्तर पर प्रतिनिधित्व नीचे के स्तर से चुनकर आता है और ऊपरी स्तर का प्रतिनिधि अपने नीचे के स्तर के प्रति जवाबदेह होता है।**

**पांच आयामी समिति प्रणाली**

दस सोपानीय व्यवस्था के हर स्तर पर पाँच प्रमुख आयामों की समितियाँ होती हैं जो मानव जीवन के सभी पहलुओं को संभालती हैं।

**पहली समिति शिक्षा-संस्कार समिति** है जो मानवीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था का संचालन करती है। यह समिति केवल बौद्धिक शिक्षा नहीं बल्कि संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास पर ध्यान देती है। इसमें चेतना विकास, मूल्य शिक्षा, कौशल विकास और जीवन कला की शिक्षा शामिल है।

आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित(PEER REVIEWED) शोध-पत्रिका
खंड -1, अंक-1, अप्रैल-सितंबर 2025 (प्रवेशांक), apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

**दूसरी समिति स्वास्थ्य-संयम समिति** है जो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल के साथ स्वास्थ्य के संरक्षण और संवर्धन पर भी ध्यान देती है। संयम का मतलब है जीवनशैली में संतुलन, आहार में संयम, व्यायाम की नियमितता और मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल।

**तीसरी समिति उत्पादन-कार्य समिति** है जो आवश्यकता आधारित उत्पादन और कार्य व्यवस्था का संचालन करती है। यह समिति सुनिश्चित करती है कि उत्पादन वास्तविक आवश्यकता के लिए हो तथा हर व्यक्ति को अपनी क्षमता और रुचि के अनुसार काम मिले।

**चौथी समिति न्याय-सुरक्षा समिति** है जो संबंधों में न्याय सुनिश्चित कर समाज की सुरक्षा का प्रबंध करती है। यह समिति विवादों का निपटारा करती है, न्याय दिलाती है और समाज में शांति बनाए रखती है।

**पांचवी समिति विनिमय-कोष समिति** है जो न्यायसंगत आर्थिक व्यवस्था और संसाधनों का प्रबंधन करती है। वस्तु, श्रम एवं सेवा का ही विनिमय होता है ताकि सभी को उनके योगदान का उचित मूल्य मिले और संसाधनों का उपयोग सदुपयोग हो।

**न्याय की नई परिभाषा-**

मध्यस्थ दर्शन में न्याय की अवधारणा-"न्याय- संबंधों की पहचान मूल्य का निर्वाह मूल्यांकन फलन में परस्पर तृप्ति वह उभय तृप्ति वर्तमान में विश्वास "।

यहाँ न्याय को संबंधों में पहचान, मूल्य निर्वाह और उभयतृप्ति के रूप में परिभाषित किया गया है। संबंधों में पहचान का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने विविध संबंधों को समझे और उनकी पूरकता को पहचाने। जब दोनों पक्ष अपनी-अपनी भूमिका को समझकर उसे निष्ठा से निभाते हैं, तब न्याय की स्थापना होती है। मूल्य निर्वाह का अर्थ यह है कि संबंधों में निहित मानवीय मूल्यों का ईमानदारी से पालन किया जाए। प्रत्येक संबंध में कुछ मूल्य अंतर्निहित होते हैं जैसे माता-पिता और संतान के संबंध में प्रेम, स्नेह, सेवा और सम्मान के मूल्य होते हैं। पति-पत्नी के संबंध में प्रेम, विश्वास, सहयोग और सम्मान के मूल्य होते हैं। मित्रों के संबंध में विश्वास, सहयोग और सहानुभूति के मूल्य होते हैं। जब ये मूल्य व्यवहार में उतारे जाते हैं, तब न्याय की अनुभूति होती है।

**समृद्धि का आधार**

मध्यस्थ दर्शन में समृद्धि की अवधारणा केवल भौतिक संपदा के संचय तक सीमित नहीं है बल्कि यह जीवन के सभी क्षेत्रों में संतुलन और पूर्णता को दर्शाती है।

"समृद्धि -आवश्यकता से अधिक का उत्पादन, उपभोग कम, अभाव का अभाव"।

समृद्धि के चार मुख्य आधार हैं - समान अवसर, न्यायसंगत उत्पादन, उचित वितरण और मूल्य आधारित विनिमय। समान अवसर का अर्थ यह है कि सभी लोगों को विकास के समान अवसर मिलने चाहिए। हर व्यक्ति को अपनी क्षमताओं को विकसित करने और अपने सपनों को पूरा करने का समान अधिकार होना चाहिए। न्यायसंगत उत्पादन का अर्थ यह है कि उत्पादन वास्तविक आवश्यकता के अनुसार हो।

उचित वितरण का अर्थ यह है कि संसाधनों का वितरण न्यायसंगत तरीके से हो। कुछ लोगों के पास अत्यधिक संपत्ति का संचय न हो जबकि दूसरे भूखे रह जाएं। वितरण की व्यवस्था इस प्रकार होनी चाहिए कि सभी की मूलभूत आवश्यकताएं पूरी हों और फिर बचे हुए संसाधनों का उपयोग विकास के लिए हो।

मूल्य आधारित विनिमय का अर्थ यह है कि आर्थिक लेन-देन में लालच, धोखाधड़ी और शोषण की जगह न हो। विनिमय श्रम मूल्य के आधार पर लाभ हानि मुक्त हो।

**अभय की स्थापना-**

"अभय -वर्तमान में विश्वास, सहअस्तित्व और आनंद सहज अपेक्षा में बौद्धिक समाधान और भौतिक समृद्धि पोषण क्रिया, परस्पर विश्वास और पूरक क्रिया" ।

अभय का अर्थ है सभी प्रकार के भय से मुक्ति। मध्यस्थ दर्शन में अभय को चार स्तरों पर देखा गया है - व्यक्तिगत अभय, पारिवारिक अभय, सामाजिक अभय और प्राकृतिक अभय।

व्यक्तिगत अभय के अर्थ में वह अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहे। उसे यह विश्वास हो कि वह अपनी समस्याओं का समाधान खोज सकता है और अपने जीवन को बेहतर बना सकता है। पारिवारिक अभय का अर्थ यह है कि परिवार में प्रेम, सुरक्षा और सहयोग की भावना हो। परिवार के सदस्यों के बीच विश्वास हो और वे एक-दूसरे की मदद के लिए हमेशा तैयार रहें। परिवार एक सुरक्षित आश्रय के रूप में काम करे जहाँ व्यक्ति को शांति और संतुष्टि मिले।

सामाजिक अभय का अर्थ यह है कि समाज में न्याय, समानता और भाईचारे की भावना हो। कोई भी व्यक्ति सामाजिक भेदभाव, अन्याय या शोषण का शिकार न हो। हर व्यक्ति को अपने विचार व्यक्त करने और अपने अधिकारों का उपयोग करने की स्वतंत्रता हो। प्राकृतिक अभय का अर्थ यह है कि मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य हो। पर्यावरण का संरक्षण हो और प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग टिकाऊ तरीके से हो।

**शिक्षा में मध्यस्थ दर्शन का योगदान**

वर्तमान शिक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी कमी यह है कि इसमें मानव होने की सार्वभौमिक परिभाषा, मानव उद्देश्य और मानवीय आचरण की स्पष्ट समझ का अभाव है। शिक्षा केवल सूचना और कौशल के हस्तांतरण तक

आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित(PEER REVIEWED) शोध-पत्रिका
खंड -1, अंक-1, अप्रैल-सितंबर 2025 (प्रवेशांक), apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

सीमित रह गई है जबकि व्यक्तित्व के विकास और मानवीय मूल्यों की शिक्षा उपेक्षित रह गई है। मध्यस्थ दर्शन इस महत्वपूर्ण कमी को पूरा करने का प्रयास करता है और शिक्षा को एक नई दिशा देता है।

"अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान ही अपने में सहअस्तित्व रूपी – 1. अस्तित्व दर्शन ज्ञान

.2 जीवन ज्ञान- .3 मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान का बोध मानव को होना है ।"

मध्यस्थ दर्शन में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य चेतना का विकास है। चेतना विकास का अर्थ यह है कि व्यक्ति में सोचने, समझने और सही निर्णय लेने की क्षमता का विकास हो। केवल तथ्यों को रटना पर्याप्त नहीं है बल्कि उन तथ्यों को समझना और उनका सदुपयोग करना आवश्यक है। चेतना विकास से व्यक्ति में विवेक, न्याय की भावना और सामाजिक जिम्मेदारी की समझ विकसित होती है।

मानवीय मूल्यों का विकास शिक्षा का दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य है। विश्वास, सम्मान, स्नेह, ममता, वात्सल्य, कृतज्ञता,गौरव, श्रद्धा, प्रेम आदि मूल्य केवल किताबों में पढ़ने की चीज नहीं हैं बल्कि जीवन में उतारने की चीज हैं। जब ये मूल्य व्यक्ति के व्यवहार में दिखाई देते हैं, तब शिक्षा सफल मानी जा सकती है। जब शिक्षक और परिवार के सदस्य स्वयं इन मूल्यों को अपने जीवन में उतारते हैं, तब बच्चे स्वाभाविक रूप से उन्हें सीख जाते हैं। समग्र व्यक्तित्व का विकास तीसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य है। शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं रहनी चाहिए बल्कि शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक सभी स्तरों पर व्यक्तित्व का विकास होना चाहिए। एक संतुलित व्यक्तित्व ही समाज के लिए उपयोगी हो सकता है और अपने जीवन में सुख और संतुष्टि प्राप्त कर सकता है।

जीवन विद्या के नाम से प्रसिद्ध यह शिक्षा प्रणाली भौतिकवाद और आदर्शवाद दोनों का विकल्प प्रस्तुत करती है। यह न तो केवल भौतिक सफलता पर जोर देती है न ही केवल आध्यात्मिक साधना पर, बल्कि जीवन के सभी पहलुओं में संतुलन बनाने पर जोर देती है। इस शिक्षा का प्रसार जीवन विद्या शिविरों के माध्यम से हो रहा है जहाँ सप्ताह भर के कार्यक्रम में इस दर्शन की मूल बातों को समझाया जाता है।

**समसामयिक प्रासंगिकता और व्यावहारिक प्रयोग**

आज के युग में जब दुनिया भर में लोकतांत्रिक संस्थानों पर से लोगों का भरोसा उठता जा रहा है, राजनीतिक दलों में भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है और चुनावी प्रक्रिया में पैसे की भूमिका लगातार बढ़ती जा रही है, ऐसे समय में मध्यस्थ दर्शन की परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था एक नई आशा दिखाती है। यह व्यवस्था जमीनी स्तर से लोकतंत्र की शुरुआत करती है और धीरे-धीरे ऊपरी स्तरों तक पहुंचाती है। इससे सत्ता का विकेंद्रीकरण होता है और आम लोगों की भागीदारी बढ़ती है।

आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित(PEER REVIEWED) शोध-पत्रिका
खंड -1, अंक-1, अप्रैल-सितंबर 2025 (प्रवेशांक), apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

पारिवारिक जीवन में भी इस दर्शन के व्यावहारिक प्रयोग देखे जा सकते हैं। जो परिवार, परिवार सभा की प्रक्रिया को अपनाते हैं, उनमें आपसी तनाव कम होता है, निर्णय प्रक्रिया में सभी की भागीदारी होती है और समस्याओं का समाधान बातचीत के माध्यम से होता है। बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है और वे जिम्मेदार नागरिक बनते हैं। शैक्षणिक संस्थानों में भी इस दर्शन के प्रयोग हो रहे हैं। आत्मीय विश्वविद्यालय, राजकोट में जीवन विद्या अध्ययन केंद्र की स्थापना इसका एक उदाहरण है। यहाँ छात्रों को न केवल तकनीकी शिक्षा दी जाती है बल्कि मानवीय मूल्यों की शिक्षा भी दी जाती है। इसी प्रकार अभिभावक विद्यालय रायपुर व अछोटी मे भी चेतना विकास मूल्य शिक्षा दी जा रही है । इससे छात्रों में नैतिक चेतना का विकास होता है और वे समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को बेहतर तरीके से समझते हैं। कृषि के क्षेत्र में भी प्राकृतिक खेती के माध्यम से इस दर्शन के सिद्धांतों को लागू किया जा रहा है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के बजाय प्राकृतिक तरीकों का उपयोग करके न केवल मिट्टी की उर्वरता बनाए रखी जा रही है बल्कि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक रसायनों से भी बचा जा रहा है।

**निष्कर्ष**

मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद में परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था आधुनिक युग की चुनौतियों का एक व्यापक और व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करती है। यह दर्शन न केवल सैद्धांतिक स्तर पर बल्कि व्यावहारिक जीवन में भी लागू होने योग्य है। परिवार को व्यवस्था की मूल इकाई मानकर और वहाँ से शुरू होकर विश्व परिवार तक पहुंचने वाली दस सोपानीय व्यवस्था एक ऐसा मॉडल प्रस्तुत करती है जो लोकतंत्र, न्याय और मानवीय मूल्यों को जमीनी स्तर से जोड़ती है।

इस व्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी भी बाहरी शक्ति या संस्था पर निर्भर नहीं है बल्कि मानवीय समझ और सहयोग पर आधारित है। जब परिवार स्तर पर व्यवस्था सुनिश्चित होती है, तभी समाज और राष्ट्र स्थायित्व की ओर अग्रसर होते हैं। परिवार सभा से शुरू होकर ग्राम सभा तक का विस्तार स्वराज्य की व्यवस्था को जमीनी स्तर पर लागू करने का एक प्रभावी तरीका है। परिवार में संबंधों की पहचान, न्याय और सामूहिक निर्णय प्रक्रिया से शुरू होकर यह व्यवस्था ग्राम सभा तक पहुंचती है, जहाँ समिति आधारित कार्यप्रणाली के माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य, उत्पादन, विनिमय और न्याय जैसी आवश्यक व्यवस्थाओं का संचालन होता है।

यह व्यवस्था समाज में सामूहिकता, न्याय और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है, जिससे एक संतुलित और समरस समाज की स्थापना हो सकती है। मध्यस्थ दर्शन में प्रस्तुत परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का साधन है। वर्तमान समय में जब विश्व भर में असमानता, पर्यावरणीय

संकट, सामाजिक अशांति और मानसिक तनाव की समस्याएं बढ़ रही हैं, तब मध्यस्थ दर्शन का यह प्रस्ताव एक वैकल्पिक मार्ग दिखाता है जो प्रेम, सहयोग और न्याय पर आधारित है।

शिक्षा और नीति निर्धारण में इस व्यवस्था को शामिल करके समाज में स्थिरता, संतुलन और समाधान लाया जा सकता है। मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद की परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था मानवता के लिए एक नई आशा और नई दिशा का संकेत है। यह व्यवस्था दिखाती है कि एक बेहतर दुनिया संभव है। इस दर्शन का अध्ययन और अनुप्रयोग व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। यह न केवल समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है बल्कि उन समस्याओं की जड़ तक पहुंचकर उन्हें समझने और हल करने का मार्ग दिखाता है। अंततः यह दर्शन मानवीय गरिमा, स्वतंत्रता और न्याय के आदर्शों को साकार करने का एक व्यावहारिक और टिकाऊ तरीका प्रस्तुत करता है।

**उद्धरण**

1. नागराज ए,(2016). परिभाषा संहिता, जीवन विद्या प्रकाशन ( पेज193)
2. नागराज ए, (2015). मानव व्यवहार दर्शन (पृष्ठ 2)
3. नागराज ए, (2009). आवर्तनशील अर्थशास्त्र ,जीवन विद्या प्रकाशन,अमरकंटक (पेज 183)
4. नागराज ए, (2007). मानवीय मानवीय संविधान सूत्र व्याख्याजीवन विद्या प्रकाशन, अमरकंटक पृष्ठ (216)
5. नागराज ए, (2017), व्यवहारात्मक जनवाद, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकंटक (पेज-109)
6. नागराज ए, (2018). मानव अभ्यास दर्शन,जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकंटक) (पेज-58)
7. नागराज ए, (2016). परिभाषा संहिता, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकंटक (पेज-103)
8. नागराज ए, 2016,परिभाषा संहिता, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकंटक (पेज-191)
9. नागराज ए, 2016,परिभाषा संहिता, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकंटक (पेज-21)
10. नागराज ए, (2016 ) विकल्प एव अध्ययन बिन्दु, जीवन विद्या प्रकाशन) पेज -15)

**संदर्भ सूची-**

1. नागराज ए, (2012). मानव व्यवहार दर्शन. दिव्य पथ संस्थान, अमरकंटक.
2. नागराज ए, (2010). मानव कर्म दर्शन. दिव्य पथ संस्थान, अमरकंटक.
3. नागराज ए, (2010). मानव अभ्यास दर्शन. दिव्य पथ संस्थान, अमरकंटक.
4. नागराज ए, (2008). परिभाषा संहिता. दिव्य पथ संस्थान, अमरकंटक.
5. नागराज ए, (2007). मानवीय संविधान सूत्र व्याख्या. दिव्य पथ संस्थान, अमरकंटक.
6. नागराज ए, (2009). व्यवहारात्मक जनवाद. दिव्य पथ संस्थान, अमरकंटक.
7. नागराज ए, (2009). आवर्तनशील अर्थशास्त्र. दिव्य पथ संस्थान, अमरकंटक.
8. साहू, गौरीकान्ता और छानवाल, सुनील. (2024). "मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद में परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था". एल जे विश्वविद्यालय, अहमदाबाद.
9. मध्यस्थ दर्शन आधिकारिक वेबसाइट: https://madhyasth-darshan.info/
10. जीवन विद्या शिविर संबंधी जानकारी: https://www.jeevan-vidya.com/